

ॐ		चेतनतत्त्व जो कूटस्थ नित्य है					
		ब्रह्म जो सृष्टि का निमित्त-कारण है			पुरुष (आत्मा) जो अनन्त और द्रष्टा है		
पाद	मात्रा	ब्रह्म का रूप	सृष्टि का कार्य	ब्रह्म जो उपास्य है	उपास्य का उपासक	चेतना की अवस्था	मुख्य प्रकृति
१	अकार	शबल जो स्थूल रूप है	उत्पत्ति जो ब्रह्मा है	विराट् जो चेतनतत्त्व और समष्टि स्थूल जगत् (जड़) का अधिष्ठाता है	विश्व जो चेतनतत्त्व का शबल स्वरूप और व्यष्टि स्थूल शरीर (जड़) का अभिमानी जीव है	जाग्रत जो कर्ता और भोक्ता है	अग्नि
२	उकार	शबल जो सूक्ष्म रूप है	स्थिति जो विष्णु है	हिरण्यगर्भ जो चेतनतत्त्व और समष्टि सूक्ष्म जगत् (जड़) का अधिष्ठाता है	तैजस जो चेतनतत्त्व का शबल स्वरूप और व्यष्टि सूक्ष्म शरीर (जड़) का अभिमानी जीव है	स्वप्न जो केवल भोक्ता है	वायु
३	मकार	शबल जो कारण रूप है	प्रलय जो महेश है	ईश्वर जो चेतनतत्त्व और समष्टि कारण जगत् (जड़) का अधिष्ठाता अर्थात् पुरुष-विशेष है	प्राज्ञ जो चेतनतत्त्व का शबल स्वरूप और व्यष्टि कारण शरीर (जड़) का अभिमानी जीव है	सुषुप्ति जो अकर्ता और अभोक्ता है	आदित्य (महत्तत्त्व)
४	अमात्र विराम	निर्गुण जो अधिष्ठाता है	शुद्ध-ब्रह्म	शुद्ध-ब्रह्म अथवा परब्रह्म अथवा परमात्मा जो नियन्ता और सर्वज्ञ अर्थात् शुद्ध-चेतनतत्त्व, ज्ञानस्वरूप, सर्वव्यापक, निष्क्रिय, अनादि और अनन्त है	शुद्ध-आत्मा जो साक्षी है	तुरीय	

ॐ		जड़तत्त्व जो नित्य परिणामी है			बन्ध और मोक्ष
		प्रकृति जो दृश्य अर्थात् नाम और रूप वाली है			
पाद	मात्रा	५ कोश	तत्त्व	प्रधान गुण	
१	अकार	अन्नमय — ५ स्थूल भूत अर्थात् स्थूल शरीर और स्थूल इन्द्रियाँ	५ स्थूल भूत — आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ५ तन्मात्रा — शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध	तमस् जो स्थिति है	वैकृतिक
२	उकार	प्राणमय — ५ कर्मेन्द्रियाँ और ५ प्राण मनोमय — मन और ५ ज्ञानेन्द्रियाँ विज्ञानमय — बुद्धि और अहंकार	५ कर्मेन्द्रियाँ — वाणी, हस्त, पाद, उपस्थ और गुदा ५ प्राण — प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान (५ उप-प्राण — नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय) ५ ज्ञानेन्द्रियाँ — श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, रसना और घ्राण	रजस् जो क्रिया है	दाक्षिणिक
३	मकार	आनन्दमय — समष्टि-चित्त अर्थात् महत्तत्त्व		सत्त्व जो प्रकाश है	प्राकृतिक (और विदेह)
४	अमात्र विराम			गुणातीत	कैवल्य